पंतनगर विश्वविद्यालय की पहल से खुला आत्मनिर्भरता का मार्ग

पंतनगर। 29 अगस्त 2025। खटीमा ब्लॉक के भडाभुडिया गाँव में जनजातीय महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की गई। गाँव में आयोजित दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ने न केवल महिलाओं को मूल्य संवर्धन तकनीकों से परिचित कराया, बल्कि उन्हें स्वरोजगार शुरू करने का अवसर भी उपलब्ध कराया। यह प्रशिक्षण 'मूल्य संवर्धन से जनजातीय महिलाओं का उद्यमिता विकास' विषय पर आधारित था, जिसका आयोजन गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कृषि संचार विभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वित्तीय सहयोग से किया।

इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य मनोज सिंह राना, डा. नरेश कुमार, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्रीमती सुरेंदरी देवी तथा परियोजना अन्वेशक एवं सहायक प्राध्यापिका, कृषि संचार विभाग डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल मौजूद रहीं। मनोज सिंह राना ने कहा कि 'मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्माण से महिलाएं न केवल परिवार की आय बढ़ा सकती हैं, बल्कि समाज में अपनी अलग पहचान भी बना सकती हैं। ऐसे प्रशिक्षण ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में बहुत मददगार हैं।' डा. नरेश कुमार ने कहा कि इस प्रकार के प्रयास ग्रामीण विकास और महिला उद्यमिता को नई दिशा देने वाले हैं। स्वरोजगार से महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ेगा और गाँव की समग्र प्रगति संभव होगी। डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल ने बताया कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य जनजातीय महिलाओं को स्वावलंबी और उद्यमशील बनाना है। यदि महिलाएं मंडुआ और अन्य स्थानीय उत्पादों का मूल्य संवर्धन करके बाजार तक पहुँचाएँगी, तो इससे उनकी आय में कई गुना वृद्धि हो सकती है। श्रीमती सुरेंदरी देवी ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि महिलाओं के लिए स्वरोजगार सबसे बड़ा हथियार है। यदि महिलाएं खुद काम करना शुरू करेंगी तो उन्हें न केवल आर्थिक लाभ होगा बल्कि आत्मसम्मान भी मिलेगा। प्रशिक्षण में महिलाओं को मंडुआ बिस्कुट, लापसी, नमकीन और केक बनाने की तकनीक सिखाई गई। साथ ही विपणन, पैकेजिंग और आय वृद्धि की रणनीतियों पर भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में महिलाओं को स्वरोजगार शुरू करने हेतु प्लास्टिक टब, कंटेनर, मंडुआ आटा, मैदा, चीनी, खोया, रिफाइंड तेल, नमक, गुड़ और सूजी जैसे कच्चे माल और उपकरण वितरित किए गए।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया और इस पहल को जीवन–परिवर्तनकारी अनुभव बताया और कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण से उन्हें न केवल आर्थिक मजबूती मिलेगी बल्कि आत्मनिर्भरता और सामाजिक सम्मान का मार्ग भी प्रशस्त होगा।